आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 7 मार्च, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुपालन में महिलाओं की भूमिका

महिला पशुपालकों को राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

पशुधन को आम तौर पर ग्रामीण आजीविका का प्रमुख स्त्रोत माना जाता है तथा कृषि प्रधान भारत देश में पशुधन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। ग्रामीण महिलाओं की इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए 8 मार्च को राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। भारत में पशुधन उत्पादन काफी हद तक महिलाओं के हाथ में है तथा पशुपालन में महिलाओं का योगदान सराहनीय है। वास्तव में पशुपालन नारीकृत हो रहा है। लगभग 70 प्रतिशत कृषि श्रमिको, 80 प्रतिशत खाद्य उत्पादकों और 10 प्रतिशत लोग जो बुनियादी खाद्य पदार्थो के प्रसंस्करण प्रक्रिया से जुड़े हैं वे महिलाएं ही हैं। 60 से 90 प्रतिशत महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में विपणन का कार्य भी करती है। पशुओं से सम्बन्धित अधिकांश गतिविधियां जैसे पशु चारा संग्रह, पशुओं के लिए पानी और स्वास्थ्य की देखभाल, दुग्ध दुहने के साथ–साथ घरेलू स्तर पर प्रसंस्करण व विपणन भी अधिकांशतः महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। महिलाओं की भागीदारी और योगदान के बावजूद महत्वपूर्ण लैगिक असमानताएं, प्रौद्योगिकी, ऋण, सूचना, इनपुट और सेवाओं की जानकारी न होने की वजह से महिलाओं को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पशुधन उत्पादों की तेजी से बढ़ती मांग महिलाओं को सशक्तिकरण के अवसर पैदा करती है। पशुधन क्षेत्र के सतत् विकास से महिलाओं का अधिक समावेशी विकास और सशक्तिकरण होगा। पशुधन स्वामित्व, महिलाओं के निर्णय लेने, घर और समुदाय दोनों के भीतर आर्थिक शक्ति बढ़ा रहा है। महिलाओं को प्राकृतिक संसाधनों, विस्तार सेवाओं, विपणन अवसरों और वित्तीय सेवाओं के साथ–साथ अपनी निर्णय लेने की शक्तिओं का उपयोग करने में पुरूषों की तुलना में अधिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यह अड़चने महिलाओं को पशुधन सहित कृषि क्षेत्र के भीतर अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने से रोकती हैं। इस हेतु महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण में विश्वविद्यालय भी अपने पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से महिला पशुपालकों को प्रशिक्षित कर उन्हें सम्बल प्रदान कर रहा है तथा पशुपालन से सम्बन्धित नवीन वैज्ञानिक तकनीकों से भी अवगत करा रहा है।

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित करते कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गोबर-गौमूत्र प्रसंस्करण पर वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण

प्रसंस्करण कार्यों को मॉडल रूप में विकसित करें : संभागीय आयुक्त नीरज के. पवन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में गोबर–गौमूत्र के जैविक उत्पादों के प्रसंस्करण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 26 फरवरी को आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय और राजस्थान गौ–सेवा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में राज्य के पशुविज्ञान केन्द्रों के प्रभारी अधिकारियों और टीचिंग एसोसिएट्स ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त डॉ. नीरज के. पवन ने कहा कि गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। बीकानेर संभाग को इसके लिए एक मॉडल स्वरूप में विकसित करने के लिए ग्रामीण स्तर पर गौ उत्पादों के जैविक प्रसंस्करण कार्यों के लिए युवाओं को तैयार करने की जरूरत है। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा राज्य सरकार की मन्जूरी उपरान्त गोबर से खाद और गौमूत्र के जैविक उत्पाद बनाने की एक परियोजना के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय के राज्य में स्थित कृषि अनुसंधान, पशुविज्ञान केन्द्रों और अन्य संस्थानों में इसकी डेमो यूनिट स्थापित कर किसान और पशुपालकों को प्रेरित किया जाएगा। ऐसे प्रसंस्करण कार्यों से पशुपालकों एवं गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाकर पशुपालकों की आय में भी वृद्धि की जा सकेगी। राजस्थान गोसेवा परिषद के राष्ट्रीय संयोजक एवं पूर्व कुलपति, राजुवास प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि गोबर और गोमूत्र प्रसंस्करण एक सरल तकनीक है और पशुपालक अपने घर या खेत में ऐसी ईकाइयां स्थापित कर लाभ अर्जित कर सकेंगे। यह देश का पहला राज्य होगा जहां इसकी बेहतरीन शुरूआत की जा सकेगी। उन्होंने कहा कि विज्ञान और आस्था के संयोग से गौवंश की आर्थिक उपादेयता सिद्ध की जा सकेगी। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने गोबर–गौमूत्र प्रशिक्षण अभियान एवं विश्वविद्यालय के प्रसार कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की। कृषि और उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. इन्द्र मोहन वर्मा ने वैज्ञानिकों को प्रसंस्करण उपायों की सरल तकनीकों का प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम को परिषद के अध्यक्ष हेम शर्मा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर्स सहित राजस्थान गो सेवा परिषद के एडवोकेट अजय पुरोहित, गजेन्द्र सिंह सांखला, अरविंद मिढ्ढा सहित बड़ी संख्या में पशुपालक शामिल हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर में प्रदर्शन ईकाई वितरण

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर, बीकानेर में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) द्वारा प्रायोजित प्रदर्शन इकाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन 22 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने पशु विज्ञान केन्द्र को खोलने के राज्य सरकार के कदम को सराहा तथा पशुपालकों को विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा समय समय पर दिये जाने वाले प्रशिक्षणों में भाग लेने, ऑर्गेनिक खेती अपनाने एवं देशी नस्ल संवर्द्धन हेतु प्रोत्साहित किया। श्री पुरखाराम, सदस्य प्रबंधन मंडल राजुवास ने पशुपालकों को एन्टरप्रेन्योर बनने हेतु प्रेरित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विश्वविद्यालय एवं केंद्र की प्रसार गतिविधियों एवं पशुपालकों के आर्थिक विकास में योगदान पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। उप परियोजना निदेशक (आत्मा) बीकानेर राजुराम डॉगीवाल ने आत्मा के उद्देश्यो, गतिविधियों और योजनाओं के बारे में बताया। प्रभारी अधिकारी डॉ. अमित चौधरी ने पशुपालकों को केन्द्र से जुड़कर उन्नत पशुपालन हेतु आग्रह किया। कार्यक्रम में 30 पशुपालकों को वैज्ञानिक विधि द्वारा बकरी पालन हेतु प्रदर्शन इकाईयों (फीड मेंजर) एवं राजुवास खनिज लवण मिश्रण का वितरण किया गया। कार्यक्रम में नोडल अधिकारी पशुपालन विभाग डॉ. कुलदीप चौधरी, नेस्ले इंडिया से डॉ. राहुल जांगिड़, डॉ. भानु डांगी, डॉ. प्रमोद मोहता आदि ने शिरकत की।

शैक्षणिक एवं शोध की नवीन जानकारी व्यक्तित्व विकास में सहायक : कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

फैकल्टी डेवलपमेन्ट कार्यक्रम के तहत सहायक आचार्यों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना एवं राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (नार्म) हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में वेटरनरी विश्वविद्यालय के 60 सहायक प्राध्यापकों को "नेशनल ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर फैकल्टी डवलपमेन्ट" विषय पर 7 दिवसीय ऑनलाईन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। समापन सत्र में कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग ने कहा कि इस तरह के प्रशिक्षण सहायक प्राध्यापकों के शैक्षणिक एवं अनुसंधान कौशल विकास में सहायक सिद्ध होते है। शैक्षणिक एवं शोध सम्बन्धित नवीन तकनीकों की जानकारी से प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व विकास होता है एवं इनके कार्य में निपुणता आती है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. आर.वी.एस. राव एवं संयुक्त निदेशक, नार्म डॉ. जी. वेंकटेश्वरलु ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य अन्वेषक एन.ए.एच.ई.पी. एवं निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं वेटरनरी कॉलेज, उदयपुर के 30–30 सहायक प्राध्यापकों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ. आर.वी.एस. राव ने कार्यक्रम समापन पर सभी को धन्यवाद दिया। समापन सत्र में विश्वविद्यालय के डीन–डॉरेक्ट्स एवं संकाय सदस्यों ने ऑनलाइन शिरकत की।

परम्परागत पशुपालन को आधुनिक तकनीको से जोड़ने की जरूरत : कुलपति प्रो. गर्ग

आत्मा योजनांतगर्त 30 पशुपालकों का बकरी पालन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण 24–25 फरवरी को आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि विश्वविद्यालय शैक्षणिक एवं शोध कार्यों के साथ साथ पशुपालको के हितार्थ निरंतर प्रसार गतिविधियां का क्रियान्वयन कर रहा है ताकि पशुपालकों को उन्नत तकनीकों एवं नवीन शोधों का लाभ मिल सके। बकरी पालन कम लागत में शुरू होने वाला व्यवसाय है जिसको लघु एवं सीमांत किसान भी अपनाकर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि विश्वविद्यालय राज्य के 33 जिलों में से 22 जिलों में अपने संस्थानों के माध्यम से विभिन्न प्रसार गतिविधियां आयोजित कर रहा है, जिसका लाभ पूरे राज्य के पशुपालकों को मिल रहा है। प्रशिक्षण में जयमलसर व डाईयां के 30 पशुपालक शामिल हुए। डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

जैविक पशुपालन पर पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "जैविक पशुपालन" विषय पर 17 फरवरी को आयोजित प्रशिक्षण में बीकानेर जिले के 30 पशुपालक शामिल हुए। निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमंत दाधीच ने कहा कि पशुपालक वैज्ञानिक तौर पर पशुपालन करके इस व्यवसाय को लाभदायक बना सकते है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इन दो दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान जैविक पशुपालन के सिद्धांत, जैविक पशुपालन हेतु प्रमुख देशी नस्ले, आवास प्रबंधन, आहार एवं चारा प्रबंधन, खनिज लवण एवं विटामिन का महत्व, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन पशु उत्पाद प्रसंस्करण एवं विपणन, जैविक पशुपालन हेतु मानक एवं प्रमाणीकरण आदि विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किये। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में बिरमाराम प्रथम, संदीप द्वितीय एवं सम्पतलाल बिश्नोई तृतीय स्थान पर रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. विजय बिश्नोई ने किया।

गाढ़वाला में दो दिवसीय लघु कुक्कुट पालन प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में गांव गाढ़वाला में "लघु कुक्कुट पालन" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 17–18 फरवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में बीकानेर जिले के 30 पशुपालक शामिल हुए। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि वर्तमान में समन्वित कृषि एवं पशुपालन तथा विविधिकरण महत्वपूर्ण है अतः लघु कुक्कुट पालन इस क्षेत्र में आय का प्रमुख साधन साबित हो सकता है। प्रशिक्षण के उपरांत आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में मोहनराम प्रथम, कानाराम द्वितीय एवं जीवनराम तृतीय स्थान पर रहे। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. नीरज शर्मा थे।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर पशु चिकित्सकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केन्द्र द्वारा "पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन एवं निस्तारण" विषय पर बीकानेर संभाग के विभिन्न पशुचिकित्सकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 11 फरवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर प्रो. आर.के. सिंह, निदेशक अनुसंधान, प्रो. हेमंत दाधीच, अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. हुकमा राम एवं डॉ. वीरेंद्र नेत्रा, उपनिदेशक, कार्यालय पशुपालन विभाग द्वारा किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. रजनी जोशी, सह– अन्वेषक डॉ. दीपिका धूडिया, डॉ. मनोहर सैन, प्रो. प्रवीण बिश्नोई, डॉ. देवेंद्र चौधरी व डॉ. चाँदनी जावा ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण व निस्तारण का व्याख्यान प्रस्तुत किये।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल

चिंचड़ों की रोकथाम से बढ़ सकती है पशु उत्पादकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 9 फरवरी को आयोजित की गई। **पशुओं में चिंचड़ (टिक्स) की समस्या और समाधान** विषय पर विशेषज्ञ जम्मू के प्रो. सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, निदेशक प्रसार शिक्षा, शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि पशुओं के शरीर पर बुबेलिस, हाइरलोमा आदि विभिन्न प्रजाति के भूरे एवं मटमेले रंग के छोटे–छोटे चिंचड प्राय पीछे वाले पैरों पर, थनों पर, पूछे के पीछे एवं गर्दन वाले क्षैत्र में चिपके मिलते है। जहां एक तरफ ये चिंचड़ पशु के शरीर से रक्त चुसते है वही दूसरी तरफ अपनी लार में पाये जाने वाले कीटाणुओं को पशुओं के शरीर में छोड़ते है जिससे पशु बबेसियोसिस, थाईलेरियोसिस जैसी बीमारियों से ग्रसित हो जाते है। इन बीमारियों से ग्रस्त पशुओं में तेज बुखार, कमजोरी, खुन की कमी आदि लक्षण नजर आते है। पशुओं के उत्पादन स्तर में गिरावट आ जाती है एवं पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इनकी रोकथाम हेतु पशुपालकों को नियमित पशु बाड़ो की साफ–सफाई रखनी चाहिए, पशु बाडे की दीवारो एवं फर्श में दरारो को बन्द करना चाहिए, पशुओं को सप्ताह में एक बार नहलाना चाहिए। चिचड़ का प्रकोप अधिक होने की स्थिति में पशुचिकित्सक की सहायता से पशुओं के शरीर पर चिंचड़ नाशक दवाई का स्प्रे करवाना चाहिए एवं पशुरोग का उपयुक्त ईलाज करवाना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने किया।

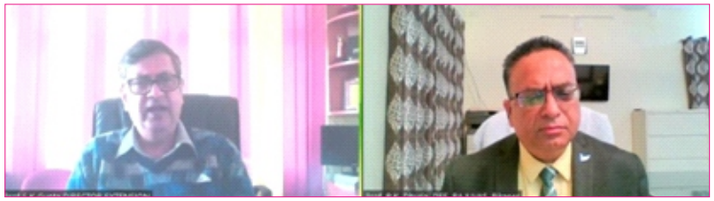

उचित आहार प्रबंधन है पशु उत्पादकता का मुख्य स्तम्भ

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 23 फरवरी को आयोजित की गई। **''दुधारू पशुओं का आहार प्रबंधन कैसे करें''** विषय पर विशेषज्ञ बरेली के डॉ. नारायण दत्त शर्मा ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने पशुपालन की आहार सम्बन्धी समस्याओं को विशेषज्ञ के समक्ष प्रस्तुत किया। डॉ. नारायण दत्त शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, पशुपोषण विभाग, भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान परिषद्, बरेली (उ.प्र.) ने बताया कि पशुपालन में 65 से 70 प्रतिशत खर्च पशुपोषण पर आता है अतः पशुपालक भाई यदि पशुपोषण पर उचित ध्यान देवें एवं पशुओं को संतुलित आहार प्रदान करें तो अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। पशुओं को वृद्वि काल, गर्भधारण से पूर्व, ग्याभिन अवस्था एवं ब्यात के पश्चात अलग–अलग अवस्था में अलग–अलग पोषक तत्वों एवं पोषण मात्रा की आवश्यकता रहती है। पशु के आहार में वसा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड, विटामिन्स एवं मिनरल्स निश्चित अनुपात में होने चाहिए। पशु को कभी भी केवल सूखा चारा या केवल हरा चारा नहीं देना चाहिए। सामान्य पशु आहार में लगभग 33 प्रतिशत भाग खल, 64 प्रतिशत भाग दाना, 2 प्रतिशत खनिज लवण एवं 1 प्रतिशत नमक होना चाहिए। अधिक दुग्ध उत्पादन वाले पशुओं को दाना या धान की अधिक मात्रा में आवश्यकता रहती है।

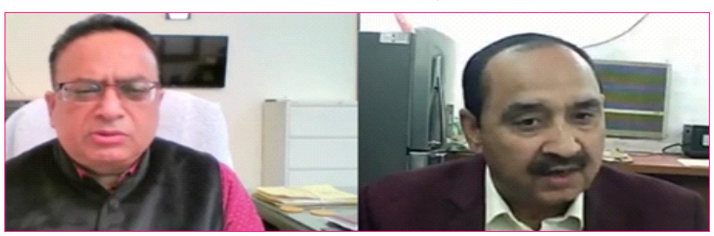

बदलते मौसम में पशुओं का उत्पादन कम ना होने दें

इन दिनों अचानक मौसम में बदलाव आया है कहीं अत्यधिक वर्षा, कहीं ओले गिरे जिससे तापमान बहुत ही कम हो गया है। तापमान में अचानक गिरावट के चलते पशुओं का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार की संक्रामक बीमारियां पशुओं को प्रभावित कर सकती है। क्योंकि जीवाणु, विषाणु अत्याधिक सक्रिय होते हैं इसलिए नियमित टीकाकरण अति आवश्यक है। दाने चारे में भी किसी प्रकार का अनावश्यक कीट पशु के लिए नुकसानदेय हो सकते हैं। अत्याधिक उत्पादन वाले पशु अचानक ऋतु में बदलाव से तनाव में आ जाते हैं, इसलिए इनका प्रबंधन, व्यायाम एवं साफ पीने के पानी की उपलब्धता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। बदलते मौसम में सबसे बड़ा खतरा परजीवियों का रहता है जो सभी प्रजातियों के पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट व अन्य पालतू पशुओं के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन जाती है। परजीवी पशु की बढ़वार, उत्पादन क्षमता तथा चमड़ी सभी को अत्याधिक रूप प्रभावित करते हैं। उत्पादन व बढ़वार में कमी तथा पशु की मौत होना आर्थिक रूप से होने वाले नुकसान है। सभी अन्य बीमारियों की तुलना में ये अत्यधिक रूप से घातक है क्योंकि इनका कोई प्रत्यक्ष लक्षण नहीं होता और आर्थिक हानि पशुपालक को झेलनी पड़ती है। ये बदलते मौसम के रोग प्रमुखतः संकर नस्लों में ज्यादा देखी गई है। हमारी स्वदेशी नस्लें इन सभी रोगों से ग्रसित तो होती हैं परन्तु इतनी जल्दी नहीं होती अत्यधिक कम और ज्यादा तापमान भी बेहतर सह सकती हैं। संक्रामक व परजीवी जनित रोगों के लिए भी प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती हैं।

इन सभी प्रकार के रोगों से बचने के लिए पशुपालक निम्न उपाय कर सकते हैं :–

- पशुओं का बाड़ा वातावरण से बचाव वाला होना चाहिए ताकि तापमान सीधे प्रभावित ना करें।
- नियमित टीकाकरण अति आवश्यक है जो विभिन्न रोगों से बचाता है।
- साफ और संतुलित चारा–बांटा सभी पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
- समय–समय पर पशुचिकित्सा विशेषज्ञ की सलाह से न केवल संक्रामक रोगों और महामारियों से हमारे पशुधन को बचा सकती है बल्कि उत्पादन क्षमता भी बढ़ा सकती है।
- पशु बाड़े के आस–पास कीट, मच्छर ना हो इसलिए गंदा पानी एकत्रित ना होने दें।
- ब्राह्य परजीवियों से बचाने के लिए पूरे बाड़े में दवा का छिड़काव अतिआवश्यक है। पशु के शरीर पर इसका उपयोग करते समय पशु के आंख, नाक एवं मुंह की दवा से दूर रखना आवश्यक है।
- मुर्गी पालन में तापमान अत्यधिक प्रभावित करता है इसलिए विछावन का अधिक महत्व है जो गर्मियों में कम व सर्दियों में अधिक मोटाई की होनी चाहिए। बिछावन में नमी नहीं होनी चाहिए।

बदलते मौसम में जहरीले जानवरों का खतरा भी ज्यादा रहता है जैसे सर्पदंश इससे बचाने के लिए एंटीवेनम लगवाना चाहिए।

रूचि मान, सुनीता पारीक, मोहित जैन, लोकेश टॉक
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 8, 14, 19 एवं 28 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 2, 4, 5, 7, 9, 11, 14, 16, 18, 19 एवं 21 फरवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 471 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8, 14 एवं 18 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 79 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 2, 5, 8, 11, 15 एवं 21 फरवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 14 एवं 24 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8 एवं 14 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 53 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 7, 10, 15, 18, 24 एवं 25 फरवरी को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 243 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 8, 15, 18 एवं 20 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 9, 17 एवं 19 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 66 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 5, 7, 10 एवं 11 फरवरी को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 14, 17, 22 एवं 25 फरवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 195 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11 एवं 16 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 46 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 4, 14 एवं 17 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 9, 14, 21 एवं 25 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 3–4 फरवरी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनु.जाति उपयोजना के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 138. पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 14, 21, 24 एवं 28 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 8, 14 एवं 19 फरवरी को गांव थिराना, भगवान एवं थालड़का में एक दिवसीय तथा दिनांक 24–26 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित तीन दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2022

(प्रो. {डॉ.} राजेश कुमार धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

दूध में मिलाये जाने वाले अपमिश्रण एवं पहचान के उपाय

विश्व में भारत का दूध उत्पादन में प्रथम स्थान है फिर भी दूध अपमिश्रण एक वैश्विक चिंता का विषय है एवं विकासशील देशों में इसकी निगरानी और नीतियों में कमी के कारण इससे जुड़े बड़े जोखिम हैं। दूध उस वक्त खतरनाक हो जाता है जब इसमें मिलावट करके इसकी शुद्धता कम कर दी जाती है। दुर्भाग्य से, आमधारणा के विपरीत, दूध में मिलावट स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती है, जिसके कारण घातक रोग हो सकते हैं। कई बार ऐसा होता है कि दूध में सिर्फ पानी ही नहीं मिलाया जाता बल्कि इसकी मात्रा बढ़ाने के लिए इसमें कई रसायन भी मिला दिए जाते हैं, जो न सिर्फ आपको बीमार बना सकते हैं बल्कि बढ़ते बच्चों के विकास में भी बाधक बन सकते हैं। सामान्यतया: दो तरह के अपमिश्रण दूध में मिलावट के लिए उपयोग में लिए जाते हैं एक तो वो अपमिश्रण जो स्वास्थ्य पर ज्यादा विपरीत प्रभाव नहीं डालते तथा जो केवल आर्थिक प्रेरणा के लिए मिलाये जाते हैं।

मिलावट के कारण : अपमिश्रण मुख्यतया वसा, वसा रहित ठोस एवं प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाने के लिए मिलाये जाते हैं जो की दूध की गुणवत्ता को बेईमान तरीके से बढ़ा देते हैं।

दूध में मिलाये जाने वाले अपमिश्रण के बारे में-

- ❖ केन शुगर (गन्ने की शर्करा), स्टार्च, यूरिया, सलफेट साल्ट एवं नमक का उपयोग दूध में वसा रहित ठोस की मात्रा को बढ़ाने में किया जाता हैं ।
- ❖ वेजिटेबल तेल का उपयोग दूध में वसा की मात्रा को बढ़ाने में करते हैं ।
- ❖ यूरिया का उपयोग दूध में एन. पी. एन. (गैर प्रोटीन नाइट्रोजन) की मात्रा को बढ़ाने में किया जाता हैं ।
- ❖ मेलामाइन का उपयोग दूध में प्रोटीन की मात्रा को बढ़ाने में करते हैं ।
- ❖ अमोनियम सल्फेट का उपयोग दूध के विशिष्ट गुरुत्व को बढ़ाने में होता हैं ।
- ❖ डिटर्जेंट का उपयोग दूध में झाग बनाने में किया जाता हैं जो की वेजिटेबल तेल को दूध में घोल देता हैं ।
- ❖ फॉर्मेलिन, सलिसिलिक अम्ल, बेंजोइक अम्ल एवं हाइड्रोजन पर ऑक्साइड का उपयोग दूध की सेल्फ लाइफ को बढाने में किया जाता हैं

स्वास्थ्य पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव :

मिलावटी दूध के सेवन करने से शरीर पर कई तरह के स्वास्थ्य सम्बंधित प्रभाव देखने को मिलते हैं

यूरिया से मिलावटी दूध को पीने से गुर्दे पर अधिक भार पड़ता हैं जिससे गुर्दे खराब हो जाते हैं।

- ❖ मेलामिन से मिलावटी दूध के सेवन से वृक्कीय विफलता हो सकती है।
- ❖ कार्बोनेट तथा बाइकार्बोनेट मिलावटी दूध के सेवन से प्रजनन से सम्बंधित हार्मोन्स को नष्ट हो जाते हैं।
- ❖ फॉर्मेलिन युक्त दूध पीने से कई तरह के चर्म रोग एवं कर्क रोग हो जाते हैं।
- ❖ हाइड्रोजन–पर–ऑक्साइड युक्त दूध पिने से पाचन तंत्र से सम्बंधित बीमारियां हो सकती हैं।
- ❖ स्टार्च की वजह से दस्त लगने लग जाते हैं। अतः मिलावटी दूध पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता हैं।

दूध में मिलावट की पहचान : कुछ अपमिश्रण जिनकी पहचान घर पर की जा सकती हैं जैसे कि दूध में पानी को पहचनाने के लिए ढलान वाली सतह पर दूध की एक बूंद डालें। शुद्ध दूध की बूंद धीरे–धीरे सफेद लकीर छोड़ते हुए जाएगी, जबकि पानी की मिलवाट वाली बूंद बिना कोई निशान छोड़े बह जाएगी। स्टार्च को पहचनाने के लिए आयोडीन घोल में कुछ दूध की बूंदे डालें, अगर वह नीली हो जाएं, तो समझें कि वह स्टार्च है। यूरिया को पहचानने के लिए एक चम्मच दूध को टेस्ट ट्यूब में डालें। उसमें आधा चम्मच सोयाबीन या अरहर का पाउडर डालें। अच्छी तरह से मिला लें। पांच मिनट बाद, एक लाल लिटमस पेपर डालें, आधे मिनट बाद अगर रंग लाल से नीला हो जाए, तो दूध में यूरिया है। सिंथेटिक दूध का स्वाद कड़वा होता है, उंगलियों के बीच रगड़ने से साबुन जैसा लगता है और गर्म करने पर पीला हो जाता है।

डॉ. संजय सिंह एवं डॉ. रेणु कुमारी
आई.आई.वी.ई. आर. रोहतक, हरियाणा

चींचड़ों से फैलता है गाय-भैंसो में बबेसिओसिस रोग

बबेसिओसिस गाय–भैंसो में पाया जाने वाला एक घातक प्रोटोजोआ रोग है। इस बीमारी का फैलाव चींचड़ों के द्वारा होता है। इसमें रोगी पशु को तेज बुखार, एनीमिया, पीलिया, हीमोग्लोबिनोयुरिया जैसे लक्षण प्रकट होते हैं। बबेसिओसिस में अधिकतर रोगी पशुओं की मृत्यु हो जाती है। भारत में गाय, भैंस, घोड़े आदि से लेकर लगभग सभी पालतू पशुओं में यह रोग पाया जाता है। गोवंश में संकर नस्ल के पशु इस रोग से अधिक प्रभावित होते हैं और मृत्युदर भी इनमें ही अधिक होती है। बबेसिया परजीवी की चार प्रमुख प्रजातियां बबेसिया मेजर, बबेसिया बोविस, बबेसिया बाइजेमिना व बबेसिया डाईवरजेन्स गाय तथा भैंस को अधिक प्रभावित करती हैं। इस रोग की अवधि अधिकतर पशुओं में 1–2 सप्ताह तक होती है। यह रोग पशुओं में दूध उत्पादन में कमी, शारीरिक विकास में कमी, बीमार पशुओं के इलाज की लागत, मृत्यु दर तथा काम करने वाले पशुओं की कार्य क्षमता की कमी करके पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचाता है।

संक्रमण :

बबेसिया परजीवी खून की लाल रक्त कणिकाओं में पाये जाते है और ये नाशपति के आकार में जोड़े से मिलते है। बुफेलिस, रिफिसेफेलस, डरमासेन्टर, हायलोमा चींचड़ के द्वारा ये परजीवी अधिक फैलते हैं तथा रोग फैलाते हैं। इस रोग में लाल रक्त कणिकाओं में मौजूद हीमोग्लोबिन पेशाब के द्वारा शरीर से बाहर निकलने लगता है जिससे पेशाब का रंग लाल व कॉफी के रंग का हो जाता है। कभी–कभी पशु को खून वाले दस्त भी लग जाते हैं। इसमें पशु में खून की कमी हो जाने से बहुत कमजोर हो जाता है, पशु में पीलिया के लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं तथा समय पर इलाज ना कराया जाए तो पशु की मृत्यु हो जाती है।

प्रमुख लक्षण :

- ❖ तेज बुखार व दुग्ध उत्पादन में अचानक गिरावट
- ❖ सांस व हृदय गति बहुत तेज
- ❖ खून की कमी
- ❖ सुस्ती व कमजोरी होना, भूख में कमी
- ❖ मूत्र का रंग लाल या गहरा भूरा कॉफी जैसा होना
- ❖ पहले दस्त लगना तथा उसके बाद कब्जी होना

उपचार :

लक्षणों के अनुसार पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करें।

रोकथाम तथा बचाव :

- ❖ इस बीमारी से पशुओं को बचाने के लिए उन्हें चिचड़ियों के प्रकोप से बचाना जरूरी है
- ❖ प्रारम्भिक अवस्था में पशु के रोग की पहचान व उचित उपचार करें
- ❖ रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें
- ❖ चींचड़ों के नियंत्रण के लिए समय–समय पर पशुशाला में चींचड़–रोधी दवाई का छिड़काव करें

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय, भैंस	अलवर, बाड़मेर	–	–	–
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, बाड़मेर, बीकानेर, दौसा, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, पाली
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सीकर, उदयपुर	–	–	–
फेशिओलोसिस	गय, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाड़ा	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर	भरतपुर	अलवर, सीकर	बांसवाड़ा, बारां, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझूनू, करौली, कोटा, नगौर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर	अलवर, दौसा	–	बारां, बाड़मेर, बूंदी, झुंझूनू
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बारां, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर	–	–	–
स्वाइन फीवर	सूकर	झालावाड़	–	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

उन्नत तकनीक और डेयरी फार्म से विरेन्द्र की बदली किस्मत

डूंगरपुर जिले के बिछिवाड़ा तहसील बेहना गांव के विरेन्द्र कुमार पटेल ने कृषि एवं पशुपालन में उचित सामंजस्य से आजीविका चलाने में सूझबूझ का परिचय दिया है। विरेन्द्र कुमार हायर सैकण्डरी तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद खेती और पशुपालन को आजीविका चलाने का साधन चुना जिसमें उनको शुरूआत के दिनों में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। विरेन्द्र कुमार ने 2 गाय और 4 भैंसों से अपना डेयरी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों से लगातार संपर्क में रह कर वैज्ञानिक तौर–तरीके से पशुपालन की जानकारी प्राप्त की। वर्तमान में इनके पास 6 भैंस, 3 पांडिया, 5 गाय, 3 बछिया तथा खेती जोतने के लिए 2 बैल भी है। गायों व भैंसों का 20 लीटर दूध प्रतिदिन कॉपरेटिव डेयरी को बेचकर आय अर्जित करते है तथा गोबर का उपयोग अपनी खेती में करके रासायनिक खाद् की मात्रा तथा लागत को कम करने में सफल हुए है। विरेन्द्र गाय तथा भैंस का दूध बेचकर लगभग 2.5 लाख रूपये प्रतिवर्ष लाभ कमा रहें है, तथा घर की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रहे हैं। वैज्ञानिक तरीकों से पशुपालन करने के लिए समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से सलाह तथा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर समय पर टीकाकरण, कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवणों की उपयोगिता, ग्याभिन व दुधारू पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार तथा पशुओं की विभिन्न बीमारियों एवं उनकी रोकथाम की जानकारी प्राप्त करते हैं। विरेन्द्र कुमार ने पशुपालन की नवीन तकनीकों का उपयोग करके गांव में एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

सम्पर्क- विरेन्द्र कुमार पटेल, गांव बेहना, तहसील बिछिवाड़ा (डूंगरपुर) (मो. 9983766435)

निदेशक की कलम से...

खीस नवजात पशुओं के लिए वरदान

राजस्थान की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि व पशुपालन पर आधारित है। कृषि के बाद पशुपालन ही ग्रामीण आजीविका का प्रमुख साधन माना जाता है। पशुपालन व्यवसाय में नवजात पशुओं की उचित देखभाल करना महत्वपूर्ण कार्य है। जैसा प्रायः देखा गया है कि गाय व भैंस के बछड़ों में मृत्युदर अधिक पायी जाती हैं, जिसका प्रमुख कारण पर्याप्त मात्रा में खीस का नहीं मिलना है। गाय, भैंस बच्चा देने के पश्चात करीब एक सप्ताह तक सामान्य से ज्यादा गाढ़ा दूध देती हैं, जो हल्के पीले रंग का होता है, इसे खीस या कोलोस्ट्रम कहा जाता है। यह खीस नवजात बछड़ों के लिए एक वरदान साबित होता है। इसमें सामान्य दूध की तुलना में 4—5 गुना अधिक प्रोटीन व 7—8 गुना अधिक विटामिन ''ए'' पाया जाता है तथा कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, सोडियम, पौटेशियम तथा जिंक पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। साथ ही इसमें उच्च स्तर के एन्टीबॉडिस भी पाये जाते हैं। खीस नवजात पशुओं को दिया जाने वाला पहला और आवश्यक अनमोल आहार व बेहद पौष्टिक आहार है। खीस पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो पशु को बीमारियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है और पशु के विकास को बढ़ावा भी देता है। अतः जन्म के बाद पहले घण्टे के अन्दर जितना जल्दी हो सके नवजात पशुओं को खीस पिलाना चाहिए। प्रायः पशुपालकों में गलत भ्रान्ति है कि जब तक गाय, भैंस जेर न डाल दे, तब तक बछड़ों को खीस नहीं पिलाना चाहिए। यह बिल्कुल गलत बात है, बल्कि जन्म के उपरान्त नवजात बछड़ों को 1—1.5 घण्टे के अन्दर खीस पिलाना चाहिए। यह खीस नवजात पशुओं को बीमारियों से ही नहीं बचाता बल्कि खीस हल्के जुलाव व रूप में कार्य भी करता है तथा बछड़े—बछड़ियों को म्यूकोनियम (पहला मल) को साफ करने में भी मदद करता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

RAJUVAS

e-पशुपालक चौपाल

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को

समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण

LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया